मैं रब से मुझे मुहब्बत है

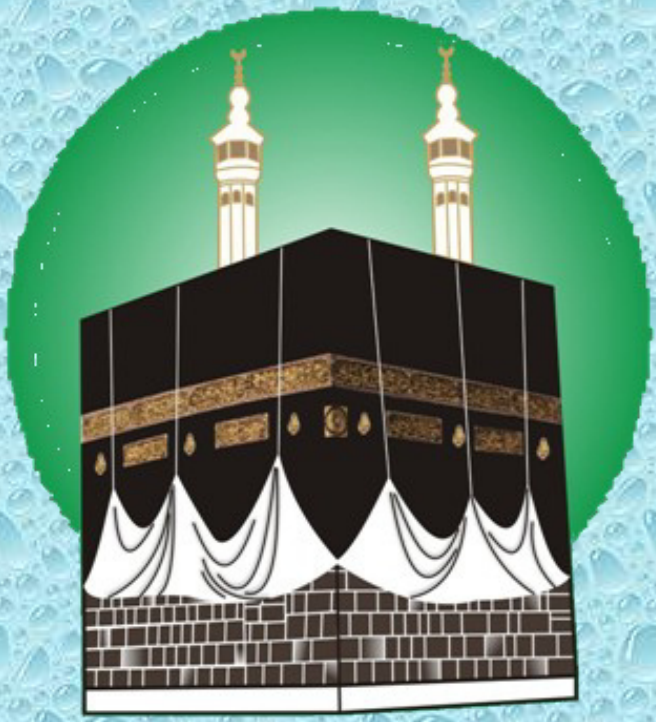

तक़रीरः डॉ.मुहम्मद अशरफ आसिफ जलाली साहब

email: labbaikyarasoolallah_indore@rediffmail.com

मदनी इल्तिजाः इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो ब-ज़रिअए ईमेल मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन
वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यदिल अंबियाए वल मुरसलीन
व अला आलेहि व अस्हाबेहि व अहले बैतेहि
व औलियाए उम्मतेहि अजमईन

अम्मा बाअद

फआऊजोबिल्लाहे मिनशैतानिर्रजीम

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ اَنۡدَادًا یُّحِبُّوۡنَہُمۡ کَحُبِّ اللّٰہِ ؕ وَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰہِ ؕ وَلَوۡ یَرَی الَّذِیۡنَ

ظَلَمُوۡۤا اِذۡ یَرَوۡنَ الۡعَذَابَ ۙ اَنَّ الۡقُوَّۃَ لِلّٰہِ جَمِیۡعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰہَ شَدِیۡدُ الۡعَذَابِ

(कुरआन ;सूरह नंबर 31 ;सूरह लुकमान)

सदकल्लाहुल अज़ीम व सदक़ रसूलोहुन्नबिय्युल करीमुल मतीन.

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا

अस्सलातो वस्सलामो अलैक़ा या सय्यदी या रसूलल्लाह
व अला आलिका व अस्हाबिका या सय्यदी या हबीब अल्लाह मौला या सल्लि वसल्लिम
दाईमन अबदा अला हबीबिका ख़ैरिल ख़ल्क़ि कुल्लिहिमि

अल्लाह तबारक व तआला की हम्दो सना और हुज़ूर सरवरे कायनात, अहमदे मुजतबा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबारे आलिशान में हदिया ए दुरूदो सलाम अर्ज़ करने के बाद। वारिसाने मिंबरो मेहराब,निहायत ही मोअज्जज़ व मोहतशिम हज़रातो ख़्वातीन! अल्लाह के फ़ज़्ल से और उसी की तौफीक़ से आज हमें फहमे दीन कोर्स में शिर्कत की सआदत हासिल हो रही है। आओ मेरे साथ मिल के दुआईया कलिमात के साथ अपने इस सफर का आगाज़ करते हैं। "रब्बि यस्सिर वला तोअस्सिर व तम्मिम बिलख़ैर व बेहि नसतईन" "सल्लल्लाहु अला हबीबेहि सय्यदिना व मौलाना मुहम्मद व आलेहि व अस्हाबेहि अजमईन"

रब्बे जुलजलाल के फज़्ल और तौफीक़ से आज हमारी गुफ्तगु का मोज़ू है

"मेरे रब से मुझे मुहब्बत है"

मेरी दुआ है कि रब्बे जुलजलाल हमें कुरआनो सुन्नत का फहम अता फरमाए। यक़ीनन हर शख़्स जो दिल में नूरे ईमान रखता है– ख़्वाह वह छोटा हो या बड़ा, मर्द हो या औरत, फक़ीर हो या अमीर, हाकिम हो या मेहकूम हो सब के दिल से यही आवाज़ आती है कि जो रब मेरा ख़ालिक है, मालिक है, राज़िक़ है, माअबूद व मतलूब है मुझे उस रब से प्यार है और ये प्यार हर लम्हा हर घड़ी बंदा ए मोमिन के दिल में मौजूद रहता है और ये मुहब्बत जो रब्बे जुलजलाल से बंदे को है उसकी वजह से बंदे के बहुत से मसाईल हर वक़्त हल होते हैं। ये मुहब्बत इंसान पर आने वाले मसाईल व

मसाईब और दुखों को दूर करने में बहुत बड़ा किरदार अदा करती है। सारी दुनिया बंदे से रूठ जाए, ये मुहब्बत फिर भी इंसान को तन्हा नही होने देती। सारी कायनात बेवफाई पर उतर आए लेकिन ये मुहब्बत इंसान को किसी के आगे झुकने नही देती। ये मुहब्बत अंधेरों में रोशनी है, ये मुहब्बत धूप में छाँव है, ये मुहब्बत हर किस्म की आलूदगी में महक़ है। ये मुहब्बत कहतसाली में अब्रे करम है। अल्लाह का फज़्ल है कि उसने हमें ईमान दिया है और हमारे ईमान को ये शान दी है कि हर वक़्त हमारे सीनों में हमारे मौला से हमारे ख़ालिक से हमारे मालिक से जो मुहब्बत है वह मुहब्बत बरकरार रहती है और उसी मुहब्बत के सहारे हमारी ज़िंदगी के दिन गुज़रते हैं।

कुरआने मजीद में अल्लाह तआला ने अपने बंदों की मुहब्बत को सराहा है और बुतों के पुजारियों के मुकाबले में अपने बंदों की मुहब्बत की अज़मतें बयान की हैं। ये भी ख़ालिके कायनात जल्ला जलालोहू का हम पर बड़ा अहसान है। उस से मुहब्बत करने वाले फरिश्ते, उस से मुहब्बत करने वाली हवाएं, फज़ाएं उस से मुहब्बत करने वाले कायनात में फैले हुए मुख़्तलिफ गिरोह हैं लेकिन रब्बे जुलजलाल ने हमारी मुहब्बत को, जो मोमिन अल्लाह से करने वाले हैं इस को इतना पसंद किया है कि अपने दुशमनों के मुकाबले में इस मुहब्बत को बतौरे तरजीह के बयान किया है। रब्बे जुलजलाल के मुन्किर मुश्रिकीन जिस वक़्त अपने झूठे माअबूदों से मुहब्बत का इज़हार कर रहे थे, तो अल्लाह तआला ने उन्हें अहसास दिलाया कि ऐ मुश्रिकीन ! तुम अपने बुतों से वह प्यार नही कर सकते जो प्यार मेरे बंदे मेरे साथ करने वाले हैं। इस से बड़ी एक मोमिन की मेराज क्या हो सकती है कि उस का जो रब से प्यार है और मुहब्बत है, उस को अल्लाह तआला ने कुबूल फरमा लिया है और रब्बे जुलजलाल ने इस बंदा ए मोमिन के दिल में मुहब्बत के पानी की जो गहराई है उस को खुद बयान कर के इर्शाद फरमाया कि कोई बुत का पुजारी अपने बुत से ऐसी मुहब्बत नही कर पाएगा जितनी गहरी मुहब्बत मेरे बंदे मेरे साथ करने वाले हैं।

कुरआने मजीद बुरहाने रशीद की सूरह बकरह की आयत नंबर 165 में रब्बे जुलजलाल ने इर्शाद फरमायाः

"लोगों में कुछ वह हैं जो अल्लाह के मुकाबले में माअबूद बना लेते हैं , उन से वह मुहब्बत करते हैं जिस तरह मोमिन अल्लाह से मुहब्बत करते हैं।"

यानी ये उन बुत परस्तों का दावा है कि उन की मुहब्बत बुतों के साथ ऐसी है जैसी मोमिन अल्लाह के साथ करते हैं

मोमिन की रब से शदीद मुहब्बत

तो अल्लाह तआला फरमाता है (**सूरह बकरह आयत 165**)

"और वो लोग जो ईमान ले आए वह अपने खुदा से कहीं ज्यादा मुहब्बत करने वाले हैं।" यानी ईमान वाले अल्लाह के बराबर किसी से मुहब्बत नही करते।

बुतों के पुजारी बुतों से वह प्यार नही करते जो मुहब्बत अल्लाह के बंदे अल्लाह के साथ करने वाले हैं।

यहाँ पर अल्लाह तआला ने बतौरे ख़ास "अन्दादन" का लफ्ज़ ज़िक्र फरमायां "अन्दादन" "नद्द" की जमा है उस का माअनी माअबूद है जो मुश्रिकीने मक्का के बनाए हुए थे।

अल्लाह तआला ने फरमाया कि तुम अपनी मुहब्बत का कितना भी दावा कर लो वह मुहब्बत खोखली मुहब्बत है, बिल आख़िर ख़त्म हो जाती है । ये ईमान वाले हैं कि जिन की मुहब्बत अपने रब के साथ यूँ बरकरार रहती है कि अगर बदन के टुकड़े भी कर दिये जाएं फिर भी ये मुहब्बत फीक़ी नही होती, बेलज़्ज़त नही होती। बल्कि जूँ जूँ अल्लाह के नाम पे सितम सहने पड़ते हैं तों तों मुहब्बत मजीद उजागर होती चली जाती है और मुहब्बत के अंदर उन हज़रात को अल्लाह तआला मजीद एक चाशनी अता फरमाता है। ख़ालिके कायनात के साथ जो मुहब्बत है, उस में जो पुख़्तगी और दवाम है और बुतों के साथ जिन की मुहब्बत थी वह जिस वक़्त मुश्किल में फंस जाते थे तो उन को यक़ीन होता था कि अब बुत हमें नही बचा सकते, तो फिर वो मुहब्बत ज़वाल पज़ीर हो जाती, तो फिर वो अल्लाह की तरफ दौड़ना शुरू कर देते। लेकिन ये अल्लाह वाले हैं, कि मसाईब व मुश्किलात में भी उनकी मुहब्बत बरकरार रहती है, अल्लाह तआला से फौरन मदद आए फिर भी मुहब्बत करते हैं अगर मदद देर से हो और इम्तिहान मक़सूद हो, बंदे को आज़माना मक़सूद हो फिर भी बंदा रब से शिकायत नही करता, या रब को छोड़ कर काफिर नही हो जाता कि फलां मौके पर मेरे रब ने मेरी मदद नही की तो मै रब को छोड़ रहा हूँ । नही! नही! बल्कि हर उस चीज़ को बर्दाश्त करते हैं जो उन के रब की तरफ से आए सर माथे पे कुबूल करते हैं और फिर भी रब ही के बन के रहते हैं और रब के कहलवाते हैं और रब के होने पर फख़र करते हैं। इसलिए अल्लाह तआला फरमाता है :

" मेरे बंदे मेरे साथ ज्यादा मुहब्बत करने वाले हैं "

तंबीहः☞ अल्लाह तआला के मुक़र्रिबीन की मुहब्बत अल्लाह तआला की मुहब्बत की अपोज़िशन (मुख़ालिफ) नही है, जिस तरह कुछ लोग प्रोपोगंडा कर रहे हैं बल्कि मुक़र्रिबीन की मुहब्बत अल्लाह तआला की रहमत का तोहफा है। अल्लाह तआला फरमाता हैः (सूरह मरियम आयत नंबर 94)

" बेशक वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अनकरीब उन के लिये रहमान मुहब्बत कर देगा । "

हज़रते अकरमा रदियल्लाहु अन्हु के कलिमा पढ़ने का मंज़र :

यहाँ पर हज़रते साअद बिन अबि वक्कास रदियल्लाहु अन्हु ने बड़ी अजीब दास्तान नक्ल की है– हज़रते साअद बिन अबि वक्कास रदियल्लाहु अन्हु हज़रते अकरमा रदियल्लाहु अन्हु के कलिमा पढ़ने का मंज़र बयान करते हैं। वह अरब के माहौल का बदनसीब इंसान जिसे अबू जहल कहा जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अज़ियत पहुँचाने में जो पेश–पेश था, नामुराद रहा और दिल पे मुहर लगी और वह रजिस्टर्ड जहन्नमी था। मगर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का करम जब बेइंतिहा था और आप से कहा जाता– ऐ मेहबूब! अगर चाहो तो उन को राख कर दें, उन पे पहाड़ गिरा दें। तो आप ने फरमाया कि मै उन के लिए रहमत बन कर आया हूँ। ये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सब्र का नतीजा था कि अबू जहल अगर नही मानता तो कोई बात नही, उस के घर में पैदा होने वाला सरकार का झण्डा उठा लेगा ।

अब अकरमा को कैसे ईमान नसीब हुआ–

हज़रते सआद बिन अबि वक्कास रदियल्लहु अन्हु कहते हैं कि कश्ती में बहुत से मुश्रिकीन बैठे थे जिन में अकरमा भी था। अचानक मौजें बड़ी तेज़ हो गईं, तुफान बरपा हो गया और बचने की कोई उम्मीद बाक़ी नही रही। जब बहरी तुफान उठा तो सारे किश्ती वाले कहने लगे अब तुम मुख़लिस हो जाओ– इख्लास का मतलब ये है कि अल्लाह को छोड़कर हम आगे पीछे भाग चुके थे, बुतों की तरफ जा चुके थे। अब सिर्फ अल्लाह को मानने वाले बन जाओ। इस वक्त तुम बुतों को पुकारना छोड़ दो, अल्लाह को पुकारो। जिस वक़्त उन्होने कहा कि तुम मुख्लिस हो जाओ और साथ कहने लगे कि तुम्हारे बुत अब तुम्हे नही बचा सकते, अब अल्लाह को पुकारो कि वह तुम्हें इस तुफान से बचाए। और ये हैं वह लोग जिनके बारे में अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया–

"वह लोग जो ईमान लाए, अल्लाह से सख़्त मुहब्बत करते हैं"

वह बिमार हो जाएं या कोई मुसीबत आ जाए और तकलीफ आ जाए, तुफान आ जाए तो वह उस खुदा को छोड़ कर कहीं और चले जाएं ? नही! नही! ऐसा हरगिज़ नही होता। इतनी तकलीफों और मुसीबतों के होते हुए भी अल्लाह तआला की तरफ मुतवज्जे रहते हैं। अल्लाह तआला की जो ताक़तें हैं और उसकी ताक़तों के जो मज़हर हैं (अल्लाह के बंदे) उन की तरफ मुतवज्जे रहते हैं।

अब वहाँ पर ऐसा हुआ कि जब किश्ती डगमगाने लगी, तुफान उठने लगा तो उन्होने एक दूसरे से कहा कि अब तुम सारे बुतों को छोड़ दो, वह कुछ नही कर सकते, इस किश्ती को सिर्फ अल्लाह बचा सकता है। बुतों की मुहब्बत ख़त्म हुई और अल्लाह तआला की तरफ मुतवज्जे हुए। तो ये उन का पहला काम नही था, बल्कि कुरआन में आया है कि

"फिर जिस वक़्त किश्ती में सुवार होते हैं तो उस वक़्त अल्लाह को पुकारते हैं एक उसी पर अक़ीदा लाकर और उस वक़्त कहते थे कि अल्लाह बरहक़ है, अल्लाह माअबूद हैं और जिस वक़्त मुश्किल से निकल जाते तो फिर समझते थे कि अब हम बच गए हैं लिहाज़ा फिर दोबारा शिर्क शुरू कर देते थे।"

तो मतलब निकलने पर छोड़ जाते, फिर आ जाते थे, ये उनकी सूरते हाल थीं अब उन्होने अपने दस्तूर के मुताबिक वैसा ही किया। हज़रते अकरमा को बड़ा गुस्सा आया, वह भी कट्टर मुश्रिक थे, बुत परस्त थे। उन्होने जिस वक़्त अपने लीडरों का ये खुतबा सुना कि अब तुम बुतों को छोड़ दो और सिर्फ तुम अल्लाह को पुकारों बुतों की तरफ तुम मुतवज्जे न होना, अल्लाह की तरफ मुतवज्जे होना। अल्लाह के दीन में इख़्लास पैदा करो– तो आप कहने लगे मुझे खुदा की कसम है अगर इस वक़्त समुंदर से अल्लाह तआला बचा सकता है तो फिर खुश्की में जाने के बाद भी अल्लाह ही बचा सकेगा। ये तुमने कैसा दस्तूर बना रखा है ? समुंदर में दाखिल होते हो तो इख़्लास करो, शिर्क न करो और जिस वक़्त बाहर चले जाते हो तो तुम अपने बुतों की बातें बताते हो कि अल्लाह के सिवा और भी माअबूद हैं अल्लाह के साथ शिर्क ठहराते हो तो मै इस पर क़ायम नही रहूँगा। ये तुम्हारा दोहरा मेयार हैं समुंदर में

तुम्हारा मज़हब और है,खुश्की में तुम्हारा मज़हब और है। **मै उस मज़हब पर जाना चाहता हूँ जो मज़हब समुंदर और खुश्की की वजह से तबदील नही होता। वह इन्सान जहाँ भी चला जाए उस का मज़हब एक ही होता है और उसकी सोच एक ही होती है।**

हज़रते अकरमा का दिल तौहीद के नूर से आबाद :

लिहाज़ा इस के बाद हज़रते अकरमा कहने लगे, अल्लाह तआला को मुख़ातिब कर के – " ऐ अल्लाह तेरे साथ मै एक मुआहिदा करता हूँ। अगर आज तूने मुझे बचाया जिस भंवर में फंस चुका हूँ, अगर तूने मुझे इस से बचा लिया तो हज़रते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चला जाऊँगा। यहाँ से निकलूँगा तो यहाँ से निकलते ही पहला काम ये करूँगा। मै हज़रते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाऊँगा तो क्या करूँगा ? फरमाया मै जाकर अपना हाथ उनके हाथ पे रख दूँगा। अगर आज तूने मुझे बचाया तो ये दूसरे जो मुश्रिक हैं, जो इस किश्ती में बैठे हुए हैं, अब मै उन से मुखतलिफ हो चुका हूँ। ये अभी इस से गुज़रेंगे तो शिर्क शुरू कर देंगे। मै अगर बच गया तो मै तेरे साथ मुआहिदा करता हूँ कि मै निकलते ही अपना हाथ तेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम के हाथ पे रखूँगा। और इतनी उम्मीद अकरमा को थी कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अफ़ूव व करम बहुत ज़्यादा है, वह कहने लगे–तो मुझे उम्मीद है, जब मै अपना हाथ उनके हाथ पे रखूँगा तो वो मुझे धक्का नही देंगे। मै ज़रूर उन को अफ़ूव व करीम पाऊँगा। बख़्शने वाला और बड़ा करीम इंसान उन को समझूँगा। जिस के बाप ने सारी ज़िंदगी रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सताया है। जब तक वह ज़िंदा रहा, शरारतें करता रहा और इंतिहा तक पहुँचा। उस के बेटे के दिल में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खुल्क़ ने इतना फतह किया हुआ है कि वह समझता है अल्लाह तआला के साथ मेने राब्ता सही करना है और शिर्क को मेने छोड़ना हैं तो जो अल्लाह का दुनिया पर मर्कज़ है वह नबी अलैहिस्सलाम का दरबार हैं लिहाज़ा जाना मुझे वहाँ है। वहाँ जाकर मुझे अपना नाम दर्ज़ कराना है। उन के हाथ में हाथ देना है। तो फिर मेरी हाज़िरी रब के दरबार में लगेगी। मै उनकी खिदमत में जाऊँगा और फिर अपनी तरफ से यक़ीन इतना हैं ताक़ीद का सेगा बोला। ये नही कहा मुझे उम्मीद है वह मुझे बख़्श देंगें ग़लतियाँ मुआफ कर देंगें नही बल्कि हज़रते अकरमा कहने लगे– मुझे यक़ीन है जब मै उन के पास जाऊँगा अपना हाथ उन अके हाथ में दूँगा तो वो मुझे कुबूल फरमा लेंगें लिहाज़ा मै उन को ग़फ़ूर और करीम पाऊँगा। वो मुझे बख़्श भी देंगे और मुआफ भी फरमा देंगें जिस वक़्त हज़रते अकरमा रदियल्लाहु अन्हु अल्लाह तआला से ये वादा कर बैठे, कश्ती बच गई और तुफान को चीर कर साहिले मुराद पे जा पहुँचीं हज़रते अकरमा रदियल्लाहु अन्हु निकले तो हज़रते साद बिन अबि वक़्क़ास रदियल्लाहु अन्हु गवाही देते हैं कि सीधे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दरबार में पहुँचे और वहाँ जाकर आपके हाथ में हाथ दिया। जिन को अल्लाह तआला ने अपना खलीफा ए आज़म करार दिया उन के हाथ में हज़रते अकरमा का हाथ पहुँचा तो उन का दिल अल्लाह की तौहीद के नूर से भर गया। सिर अल्लाह के दरबार में झुक गया

और जो उस ने समझा था कि नबी अलैहिस्सलाम कुबूल कर लेंगे, वैसा ही हुआ। सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रते अकरमा को कलिमा पढाया और हज़रते अकरमा को नूरे ईमान का ताज अता फरमा दिया।

बंदे की जो अल्लाह से मुहब्बत है, इतनी बड़ी मुहब्बत है जो किसी से कोई कर नही सकता। बुतों के पुजारी मआबुदाने बातिला के हवारी, दावे करते रहते हैं मगर जिस मुश्किल आती है तो मुहब्बत छोड़ देते हैं और फिर वह समझते हैं कि अल्लाह तआला ही हमारी इस मुश्किल को हल कर सकता है। लेकिन ये ईमान वाले हैं। ये समझते हैं कि अल्लाह तआला की तरफ से मदद में ताखीर हो जाए तो फिर भी उन के दिल खट्टे नही होते, फिर भी मुहब्बत में कमी नही आती। फिर इस बात को देखा जाता है कि ये अल्लाह तआला का अपना अंदाज़ है कि हो सकता है वह किसी बुरे की दुआ जल्द कुबूल फरमा ले कि ये मुझे पसंद नही है कि ये बुरा बंदा मुझे "या अल्लाह" कह कर पुकारे और मुझे "या रब्बी" कह कहे। ऐ मेरे फरिश्तों इस को फौरन दे दो ताकि इसके हाथ नीचे चले जाएं ये मेरे साथ बात ही न करे। दूसरी तरफ एक बड़ा बर्गुज़िदा शख़्स है जो मांग रहा है और मुसलसल मांग रहा है। अल्लाह तआला फरमाता है ऐ मेरे फरिश्तों उसे मज़ीद मांगने दो। ये मुझे "या रब्बी" कहता है तो मुझे ज़्यादा अच्छा लगता है। इस वास्ते ये हिक़्मतें हो सकती हैं कभी तो बर्गुज़िदा की दुआ को फौरन कुबूल करता है। वह उस की इज़्ज़त व इकराम के पेशे नज़र वो अद्ना जो मांग रहा था उस को इस वास्ते जल्दी दे दिया कि वह पसंद नही था, कि वह बार–बार मुझ से मांगे। लेकिन जिस वक़्त अपने मांगें तो फौरन देने में उनकी हैसियत को ज़ाहिर करना मक़सूद होता है। और अगर नही देता तो फिर उनकी हैसियत को ज़ाहिर करना मक़सूद होता है कि जितनी देर तक उस मक़सद के लिए मुतवज्जे रहेगा, मुझे उस से बड़ा प्यार है और इस प्यार की वजह से मै चाहता हूँ कि ये बोलता रहे और मै सुनता रहूँ । अल्लाह की कुदरत के फैसले बड़े अजीब हैं। बख़्शने पे आता है तो अपनी मख़लूक़ के एक हक़ीर फर्द पर अहसान करने वाले को भी बख़्श देता है, जिस ने उसे रब की मख़लूक़ समझ कर मेहरबानी की। इस अंदाज़ मे जो अल्लाह तआला देने वाला है उसके हर काम में ऐसी लाखों हिक़मतें मौजूद हैं।

मेरे रब से मुझे मुहब्बत हैं इस बात को समझने के लिए इस को पेशे नज़र रखना चाहिए कि :

मुहब्बत की दो किस्में हैं

❶ **मुहब्बते आम्मा** ❷ **मुहब्बत ए खास्सा**

1 **मुहब्बत ए आम्मा:** वह है जो हर मोमिन में है और ये वाजिब हैं इस के बग़ैर मोमिन मोमिन ही नही हो सकता।

2 **मुहब्बत ए खास्सा :** वह है जो मुहब्बत आम लोगों में नही होती बल्कि ये औलिया, सूफिया और कामिल उलमा के अंदर मौजूद होती है। और ये इंसानी मुक़ामात में से नबुव्वत के बाद सबसे बड़ा मर्तबा है। नबुव्वत का मर्तबा तो इस से उँचा है। इस के बाद इंसानी मुक़ामात जितने भी हैं उन में सब से बुलंद मर्तबा मुहब्बते खास्सा वाला मर्तबा है।

इस सिससिले में बड़ी ही लज़ीज़ गुफ्तगु है। आप देखते हैं कि स्वालेहीन के तमाम मुक़ामात हैं उन में जिस तरह कि खौफे खुदा है। किसी के दिल में थोड़ा सही और किसी के दिल में ज़्यादा सही, ये भी तो एक खौफ है कि उस ने बुतों को सज्दा नही किया, उस ने रब को एक माना।

हर मोमिन के दिल में खौफ है और हर मोमिन के दिल मे रिजाअ भी है। उसे उम्मीद भी है कि उसे उसका रब बख़्श देगा। हर मोमिन के पास कुछ तवक्कुल भी है। ये ठीक है किसी के पास थोड़ा है और किसी के पास ज़्यादा है लेकिन मोमिन मोतवक्किल ज़रूर होता है। ये तवक्कुल ही है कि उसने दुनिया कि ज़िंदगी गुज़ारनी है और तवक्कुल किया हुआ है कि यक़ीनन मेरा रब मुझे अता करेगा। ऐसा मामला नही मोमिन जैसा भी हो इतना भी गया गुज़रा नही होता बल्कि उस में कुछ न कुछ तवक्कुल ज़रूर होता है। ये मोमिन की शान है इस वास्ते उस में तवक्कुल भी है। और इस के अलावा भी बहुत सी चीज़ें मोमिन मे मौजूद हैं जैसे रिज़ा ए इलाही,सब्र, ज़ोहद। ये सारी सिफात मोमिन के अंदर पाई जाती हैं। लेकिन बिल आखिर इस में फायदा इंसान का अपना है। ये डरता है इस लिए कि मै कल जहन्नम से बच जाऊँ, जहन्नम में मै न गिरूँ ये अपने नफ्स की हिफाज़त के लिए करता है बिल आखिर जा के उस को फायदा पहुँचेगा। उसे उम्मीद है कि मुझ से मेरा रब नुकसान दूर करेगा, मुझे फायदा देगा। ये बिल आखिर उस की ज़ात की तरफ लौट रहीं हैं, ये सारी चीज़ें उस की ज़ात की तरफ पलट कर आती हैं। मगर मुहब्बत ऐसी चीज़ है जो अपने लिए नही अपने रब के लिए कर रहा है।

लेकिन जो आम मुहब्बत है उस को या तो जन्नत की शक्ल में सामने रखा जाता है या जहन्नम से बचने की शक्ल में सामने रखा जाता है। ये आम मोमिन के दिल में जो मुहब्बत है इस लिए कि मै जन्नत ले सकूँ, इस लिए कि मै जहन्नम से बच सकूँ। मगर खास लोगों के दिल में जो रब के लिए मुहब्बत है वो जन्नत के हुसूल के लिए नही और जहन्नम से बचने ले लिए नही बल्कि उन के दिलों में जो मुहब्बत है वो सिर्फ और सिर्फ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के लिए है। ये मुहब्बते खास्सा सिर्फ मेहबूब के लिए है जो किसी मुआवज़े की वजह से नही बल्कि बग़ैर मुआवज़े के मेहबूब से की जाती है। पहली मुहब्बत भी माअयूब नही क्यों कि जन्नत मांगने का अल्लाह ने हुक़्म दिया है और जहन्नम से बचने का भी हुक़्म दिया है। इस में ओई कबाहत नही है मगर ग्रेड के लिहाज़ से एक है कि जब भी अल्लाह को याद करे तो जहन्नम से डरता हुआ याद करे और और जब भी रब को पुकारे तो जन्नत की तलब में पुकारे। और एक वो जो जन्नत–दोजख की तरफ न देखे जब भी देखे तो रब के जमाल की तरफ देखे और उस को पुकारे। रब की शान को देखकर रब को पुकारे। रब के करम को देखकर रब को पुकारे। रब की सिफतों को देखकर रब को पुकारे। रब के साथ जो दिली मिलान है, अल्लाह के साथ जो दिली मुहब्बत है, वह मुहब्बत मजबूर करे–जन्नत जहन्नम का ख़याल न आने दे और हर वक़्त अपने रब की तरफ मुतवज्जे हो कर अपने रब को मेहबूब बनाए रखे। ये वो खास मुहब्बत है जो अल्लाह बन्दों को अता फरमा देता है।

बे–मिसाल मुहब्बतः

इस लिए हज़रते सईद बिन जुबैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं। कयामत का दिन ऐसा होगा–

कयामत का दिन होगा। बुत और उन के पुजारी एक लाईन में खड़े किये जाएंगे। बुतों और उनके पुजारियों को जिस वक़्त खड़ा किया जाएगा तो वह जो बुत परस्ती में मर गए थे और बुतों के दर्शन कर के अपनी ज़िंदगी गुज़ारी। मेहशर का दिन होगा। अल्लाह बुतों के पुजारियों से फरमाएगा कि तुम अपने बुतों समेत जहन्नम में दाखिल हो जाओ। तुम्हें अपने बुतों से बडा प्यार था। तुम उन को अपने साथ ले जाओ ताकि दर्मियान में जुदाई न पड़े, फिराक न हो। जहन्नम में उन के समेत दाखिल हो जाओ। जिस वक़्त अल्लाह की तरफ से यह ऐलान होगा तो वह बुत परस्त बुतों के साथ नही जाएंगे। बुत जहन्नम में चले जाएंगे और बुत परस्त पीछे खड़े हो जाएंगे। अब पता चला कि उन को बुतों से मुहब्बत नही है। अगर मुहब्बत सच्ची होती तो मेहबूब जहाँ होता, मुहिब्ब को जाना चाहिए था। बुत जहन्नम में हैं लेकिन बुतों के पुजारी अल्लाह के हुक़्म से जहन्नम में दाखिल नही हो रहे, अगर्चे उन को जहन्नम में फेंक कर भी दाखिल किया जाएगा, मगर कुछ वक़्त के लिए उनका इम्तिहान मक़सूद है। अल्लाह तआला जानता है मगर उस ने दुनिया वालों को दिखाना है मेरी मुहब्बत कैसी होती है और बुतों की मुहब्बत कैसी होती है ? उन्हे कहा कि तुम्हारे मेहबूब जहन्नम में चले गए और तुम भी उनके साथ जहन्नम में दाखिल हो जाओ तो एक भी साथ नही जाता। वो उनके नारे लगाने वाले, ज़िंदगी में उनको सज्दा करने वाले, उनको माअबूद समझने वाल , उन में से कोई एक भी उन के साथ जाने को तैय्यार नही है। फिर अल्लाह तआला काफिरों के सामने मोमिनों से इर्शाद फरमाएगा ऐ मेरे बन्दों ! अगर तुम मेरे मुहिब्ब हो तो सारे जहन्नम में दाखिल हो जाओ। मोमिनों से फरमाएगा कि अगर तुम मुझ से मुहब्बत करते हो तो सारे जहन्नम में दाखिल हो जाओ। जूँ ही रब का हुक़्म होगा तो सब छलांगें लगा कर जहन्नम में कूद जाएंगे। ये अल्लाह तआला काफिरों को दिखाना चाहता है कि मेरे मुहिब्ब मुझ से कितनी मुहब्बत करते हैं , जब कि तुम्हारे मेहबूब जहन्नम में जल रहे हैं , वह जहन्नम में पहुँच चुके हैं, तुम्हारा हौसला नही बढ़ रहा लेकिन ये मेरे मुहिब्ब और मेरे मानने वाले हैं कि मेने उन से कहा है कि अगर तुम मेरे मुहिब्ब हो तो जहन्नम में दाखिल हो जाओ तो सारे जहन्नम में कूद पड़े। कयामत के दिन मुनादी अर्श के नीचे से आवाज़ देगा जब ये मंज़र बन चुका होगा काफिर जहन्नम से डर के पीछे खड़े हैं लेकिन मोमिनीन को रब कहता है कि अगर तुम को मुझ से मुहब्बत है तो सारे जहन्नम में दाखिल हो जाओ। वो मोमिनीन एक बार भी नही कहेंगे कि ऐ अल्लाह ! तूने तो जन्नतों के वादे किये, हम जहन्नम में कैसे जाएं उस में तो आग है ? ये नही कहेंगे बल्कि वह ये देखेंगे कि हमारा रब फरमाता क्या है। उस ने आखिर मुहब्बत के एवज़ में कहा कि अगर तुम मेरे मुहिब्ब हो तो फिर जहन्नम में दाखिल हो जाओ सारे बग़ैर सोचे जहन्नम की तरफ दौड़ पड़ेंगे तो अर्श से मुनादी आवाज़ देगा { **वल्लज़ीना आ–मनू अशद्दा हुब्बा लिल्लाह** } जो ईमान वाले हैं उन की मुहब्बत का कोई मुकाबला नही कर सकता।

जैसा कि बाज़ ने कहा :

जन्नत में भेज या मुझे दोजख में डाल दे
जल्वा दिखा के मेरे दिल की हसरत मिकाल दे

अस्ल मक़सद तो अल्लाह की ज़ात है। अगर वह राज़ी है तो सब कुछ हासिल है। इस लिए हमारे सूफिया ए किराम फरमाते हैं:

हज़रते मुजद्दिद अलिफ सानी और दिगर सूफिया फरमाते हैं कि हम जो जन्नत जाने की दुआ मांगते हैं तो इस लिए नही कि वहाँ हूरें हैं बल्कि इस लिए जन्नत की दुआ मांगते हैं कि वह अल्लाह की पसंद की हुई जगह है और हम जहन्नम से जो बचने की दुआ मांगते हैं , इस लिए नही कि हम आग की वजह से वहाँ से बचना चाहते हैं, हम इसलिए उस से बचना चाहते हैं कि वह जगह हमारे अल्लाह को पसंद नही है वह अल्लाह के गज़ब की जगह है। बात तो सारी रब्बे जुलजलाल की मुहब्बत की है। अब उस की मुहब्बत के पेशे नज़र अल्लाह तआला ने फरमा दिया कि तुम मेरी मुहब्बत की वजह से जहन्नम में दाखिल हो जाओ तो हम दाखिल हो जाएंगे। ये अल्लाह तआला कुफ्फार को दिखाना चाहता है कि मोमिनों को अपने रब के साथ कितनी गेहरी मुहब्बत हैं मै उन को जो कहता हूँ ये मेरी बात मेरी मुहब्बत की वजह से मान कर उस पर अमल करते हैं।

तेरे नाम पे मिटा हूँ, मुझे क्या गर्ज़ निशां से

अल्लाह तआला दुनिया में भी ये वाज़ेह करता है और उक़बा में भी वाज़ेह करता है। मेरे मुहिब्ब जो मेरे साथ मुहब्बत करने वाले हैं , इस अंदाज़ की मुहब्बत कोई किसी से नही कर सकता। इस सिलसिले में हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने बड़ा हसीन मंज़र पेश किया है।⬇

तीन तबकों का अंदाज़े मुहब्बत

हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम तीन मुखतलिफ तबकों के पास से गुज़रे। तीन मुखतलिफ गिरोहों के पास से आपका गुज़र हुआ तो आप ने देखा

पहला तबक़ाः– उन में से बाज़ के बदन लागिर हो चुके हैं और उनके रंग बिल्कुल ज़र्द हो चुके हैं आप उन के पास रुक गए। आप ने उन से फरमाया ये क्या सबब हे कि मै तुम्हें इतना कमज़ोर देख रहा हूँ , इस कमज़ोरी की आखिर वजह क्या है और चेहरों का रंग बिल्कुल बदल चुका है ? तुम्हें क्या हुआ ? क्या बिमारी लग गई है ? आप ने जिस वक़्त उन से पूछा तो उन्होने कहा– असल में बात ये है कि न बिमारी है न मर्ज़ है न दर्द है न कोई बिमारी हैं जब जहन्नमियों के बारे में सोचते हैं और ग़ौर करते हैं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दुनिया की कोई खुशी सूझती नही, उस आग के तसव्वुर ने ये काम किया है । हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि : तुम जिस चीज़ से डरते हो अल्लाह तआला यक़ीनन तुम्हें उस आग से बचाएगा। ये अच्छा है उस आग से डरना चाहिए। **"वक़ीना अज़ाबन्नार"** ये दुआ हम आम तौर पर सोचे बग़ैर मांगते रहते हैं। तसव्वुर कर के अगर मांगें तो फिर अंदाज़ और होगा। आग का तसव्वुर करने से, यानि वो जहन्नम जिस के किनारे से पत्थर फेफें तो सत्तर साल नीचे पहुँचने में लग जाएं और उस की आग के एक शेले में इतनी तेश है जितनी दुनिया की सारी आग के अंदर नही है। ये तसव्वुर उन अबेदीन पर तारी था जिन से

हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने मिलाकात की थी। उनके चेहरों का रंग बदला हुआ था। आप उनके पास से गुज़र गए। आगे एक और जमाअत के पास पहुँचे। इस **दूसरी जमाअत** के लोग उन से भी ज़्यादा कमज़ोर थे और उनका रंग बदला हुआ था। हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने उन से पूछाः तुम्हारी इस कमज़ोरी का सबब क्या है कि तुम्हारे रंग कमज़ोरी की वजह से ज़र्द हो गए हैं ? तुम्हे खाना नही मिलता ? या कहीं दर्द है क्या वजह है ? वह कहने लगे हमें कोई मर्ज़ नही है बल्कि सिर्फ शौक है। जन्नत के शौक ने हमें यूँ बना दिया है। अब जन्नत का शौक हो, उस के लिए कुछ करना पड़ता है। जन्नत का शौक रात को सोने नही देता, दिन को अपनी मर्ज़ी नही करने देता। फिर जन्नत का जो प्राईज़ है उस की वजह से फिर जन्नत वाले काम करने पड़ते हैं। हम तो जन्नत के शौक में सब कुछ छोड़ बैठे हैं। नफ्स को जी भर के खाने नही देते क्यों की हम को जन्नत जाना है। हम ने आँखों को पाबंद कर रखा है। कानों को पाबंद कर रखा है। हमने हर वक़्त अपने आप को पाबंदियों में जकड़ रखा है। दुनिया की लज़्ज़तों पर थूक के जन्नत जाने के लिए अपने नेक अमल को जारी रखा है और हर चीज़ को हमने दिल से निकाल दिया है। हर चीज़ की रग़बत को थूक दिया है। हम जन्नत के शौक में इस कदर पाबंदी करने वाले हैं। ये जो कुछ भी सूरते हाल है ये सब जन्नत का शौक है। अब जन्नत के शौक की बात हो रही थी। हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने इस को रद नही किया कि तुम ने ठीक नही किया। नही ! बल्कि फरमाया कि ये बहुत अच्छा है जिस चीज़ का तुमें शौक है, वह अल्लाह तुम्हे अता फरमाएगा।

तीसरा तबक़ाः जब तीसरे गिरोह के पास पहुँचे तो उन के बदन पहले दोनों से ज़्यादा कमज़ोर हो चुके थे। मगर सूरते हाल क्या थी ? लगता था कि उन के चेहरे नूर के आईने हैं। जिस वक़्त उन के चमकते चेहरों को देखा तो उन से पूछा तुम्हें क्या है इतने ज़ईफ हो गए हो ? यहाँ पर हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम के सवाल का अंदाज़ मुख्तलिफ था। आप ने पूछा–तुम मुझे बताओ तुमने ये दर्ज़ा कैसे पाया ? तुम्हारे चेहरे जो नूर का आईना बन गए हैं , ये दज़ा तुम्हें कैसे मिला ? वह लोग कहने लगे– हम अल्लाह से मुहब्बत करते हैं।

पहले गिरोह से पूछा कि तुम इतन कमज़ोर क्यों हो गए और चेहरे ज़र्द हो गए, इस की वजह क्या है ? तो उन्होने कहा कि अल्लाह के डर की वजह से हमारी ये हालत हो गई, तो आपने फरमाया कि अल्लाह तुम्हे जहन्नम से बचाएगा। दूसरे तबक़े के लोगों में उन से ज़्यादा कमज़ोरी आ चुकी थी और चेहरे ज़र्द थे। उन से पूछा तुम क्यों ऐसे हो गए ? तो उन्होने कहा जन्नत के शौक में ऐसा हुआ तो आपने फरमाया अल्लाह तुम्हे जन्नत अता करेगा। तीसरा तब्क़ा जिन के चेहरे नूर के आईने की तरह रोशन हैं , उन से पूछा कि तुम ने ये दर्ज़ा कैसे पाया तो वह कहने लगे एक ही काम है और कोई काम नही। हम अल्लाह से मुहब्बत करते हैं। ये वो खास मुहब्बत वालों का मुक़ाम है। जिस वक्त इस मुक़ाम पर इंसान पहुँच जाता है, फिर उस वक़्त जन्नत –दोजख के मामले पीछे रह जाते हैं। ये जिस वक़्त देखता है तो अल्लाह की रिज़ा की तरफ और उस की मुहब्बत और चाहत की तरफ इस अंदाज़ में उधर मुतवज्जे रहता है। उन को अल्लाह तआला इतना बड़ा मर्तबा अता फरमा देता है।

हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने ये सुना तो फरमाने लगे, तुम वो हो जिन को अल्लाह तआला कयामत के दिन अपना क़रीब तरीन मुक़ाम अता फरमाएगा।

मुहब्बते ईलाही के दरजात आप हज़रात के सामने हैं इस का सिला उसी मुहब्बत के दरजात के लिहाज़ से होगा। वह मुहब्बत आम्मा हो या मुहब्बते खास्सा हो, सब के लिए सिला इतना बड़ा है।

सूरतुल माईदा की आयत नंबर 58 में अल्लाह तआला फरमाता हैः तर्जुमाः अल्लाह उन से मुहब्बत करता है, ये अल्लाह से मुहब्बत करते हैं। इस से बड़ा सिला और क्या हो सकता है कि इस बन्दे ने रब से मुहब्बत की, वह रब हो के बन्दे से मुहब्बत कर रहा है। फरमाया तुम ने मुझ से मुहब्बत की, मै तुम से मुहब्बत कर रहा हूँ । अल्लाह तआला इस कदर नवाज़ रहा हैं लिहाज़ा मुहब्बत का सब से बड़ा सिला अल्लाह तआला की मुहब्बत है। यहाँ पर ये बात वाज़ेह तौर पर समझनी चाहिए कि यहाँ पर मुहब्बत का लफ्ज़ एक है हालांकि लुग्वी तौर पर मुहब्बत के लिए दिल का तक़ाज़ा है और मुहब्बत "हुब्ब" से है जिस तरह वह दाना ज़मीन में होता है, फिर जड़ निकालता है, फिर पूरा दरख़्त बनता है, इसी तरह ये मुहब्बत मुहिब्ब के दिल में एक घर बनाती है, उस दाने की तरह जिस को ज़मीन में बोया जाता है। और याद रखिए अल्लाह तआला तो दिल से पाक है। लेकिन कुरआने मजीद में बारहा अल्लाह तआला ने इस की निस्बत अपनी तरफ की है।

सूरह आले इमरान की आयत नंबर 31 में अल्लाह तआला फरमाता है.

तर्जुमा :– ऐ मेहबूब तुम उन को कह दो ! अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो तुम मेरे पीछे पीछे आ जाओ, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा।

तो पता चला मुहब्बत एक है। अल्लाह तआला अपनी शान के मुताबिक करता है और बन्दा भी अपनी हैसियत के मुताबिक मुहब्बत करता है। मगर शिर्क नहीं इस वास्ते की उन दोनों की मुहब्बतें मुख़्तलिफ है। मुहब्बत एक है कि अल्लाह भी मुहब्बत करता है, अल्लाह के बन्दे भी मुहब्बत करते हैं। मगर बन्दा मुहब्बत खुद नही करता बल्कि अल्लाह की दी हुई तौफीक से करता है और अल्लाह मुहब्बत करता है लेकिन किसी की दी हुई ताकत से नही करता बल्कि अपनी ताकत व कुदरत से करता है। यही आज लोगों को समझाने की ज़रूरत है कि कुरआने मजीद में मुतअद्दद मुक़ामात ऐसे है जो ये वाज़ेह कर रहे हैं कि जो शिर्क का झूठा पुलिंदा तैय्यार किया गया कि अल्लाह की कोई सिफत बन्दे में किसी लिहाज़ से मानी जाए तो शिर्क लाज़िम आ जाएगा। कुरआने मजीद में अल्लाह तआला ने एक सिफत अपनी बयान की, वही अपने बन्दे की भी बयान की मगर शिर्क नही हुआ। अल्लाह तआला की वो सिफत और अंदाज़ की है, बन्दे की सिफत और अंदाज़ की है। अगर्चे कुरआने मजीद में ये लिखा हुआ नही है कि अल्लाह तआला मुहब्बत ज़ाती तौर पर करता है और बन्दे अताई तौर पर करते हैं। मुत्लकन कहा है–मानने वालों के लिए फर्क़ ज़रूरी है। तो इस से पता चला कि अल्लाह तआला की ये भी मुहब्बत है कि उस ने अपनी सिफत वाला नाम अपने बन्दों को अता फरमा दिया है।

रब की मुहब्बत के तकाज़ेः

हर मुहब्बत के कुछ तकाज़े होते हैं और फिर अल्लाह तआला की मुहब्बत का तकाज़ा ए अव्वलीन क्या है ?

❶ अव्वल तकाज़ाः जो रब की पसंद वही बन्दे की पसंद

सब से बड़ा तकाज़ा अल्लाह की मुहब्बत का ये है कि जो रब को पसंद हो वही बन्दे को पसंद हो। रब को नमाज़ पसंद है, बन्दे को नमाज़ पसंद हो। रब को रोज़ा पसंद है, बन्दे को रोज़ा पसंद हो। रब को हज पसंद है, बन्दे को भी हज पसंद हो। रब को पाक आँख पसंद है, तो बन्दे भी पाक आँख को पसंद करे। रब बन्दे को शरीअत के रंग में डूबा हुआ देखना चाहता है, तो बन्दा शरीअत का पाबंद हो जाए। रब्बे जुलजलाल बन्दे को जुल्म से पाक देखना चाहता है तो बन्दा जुल्म से पाक हो। ये यक़ीनन हर शख्स का ज़ेहन मानेगा कि मुझे रब से मुहब्बत है तो फिर रब की हर पसंदीदा चीज़ से मुहब्बत होना चाहिए।

तो मेरे भाईयों!

जब नमाज़ से मुहब्बत रब से मुहब्बत हैं क्यों ? इस वास्ते की ये रब की पसंदीदा है तो फिर हज़रते मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रब से मुहब्बत है क्यों कि वह रब के सबसे बड़े मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। यहाँ आकर कुछ लोग तकसीम कर जाते हैं। पहले तो ये कहेंगे कि रब से मुहब्बत है तो रब के दीन से मुहब्बत करो। रब से मुहब्बत है तो फिर ये होना चाहिए, वो होना चाहिए।

अरे अगर रब से मुहब्बत है तो रब की हर पसंद से मुहब्बत करो और जो अल्लाह की सबसे मेहबूब चीज़ है, उस से पहले मुहब्बत करो। तो हज़रते मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जो मुहब्बत है उसे मुहब्बते ईलाही से कौन निकाल सकेगा ? इसको मुहब्बते ईलाही से नही निकाला जा सकता इस वास्ते कि ये अल्लाह के मेहबूब हैं। अगर अल्लाह के मेहबूब से मुहब्बत नही होगी तो अल्लाह से मुहब्बत कैसे हो सकती है ? चुँकि अल्लाह से मुहब्बत का तकाज़ा ये है कि अल्लाह की पसंदीदा चीज़ से मुहब्बत करो। फिर अल्लाह तआला के मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और तमाम अंबिया अलैहेमुस्सलाम, मलाइका से और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा ए किराम से मुहब्बत करो क्योंकि सहाबा ए किराम को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए अल्लाह तआला ने पसंद किया है। अहले बैत को सरकार के लिए अल्लाह ने पसंद किया है। औलिया अल्लाह की मुहब्बत इस लिए लाज़िम है कि वो अल्लाह के प्यारे हैं। लिहाज़ा ये जो ज़ातें हैं (अंबिया,औलिया वग़ैरह) आज इन को निकाल के अल्लाह की अपोज़िशन में डाल देना और उनको अल्लाह की अपोज़िशन करार देना , ये अल्लाह से मुहब्बत का तकाज़ा नही है। नही! नही! मुहब्बते ईलाही हो तब सकती है, जब उस की बारगाह वालों से मुकम्मल प्यार किया जाए, ये बात बड़ी काबिले ग़ौर है, ये दोनों शोबे बड़े ज़रूरी हैं। कोई शख्स कहे कि मुझे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत है और फिर उस्वा ए हसना को छोड़ दे, सुन्नत को छोड़ दे, नमाज़ को छोड़ दे, रोज़े को छोड़ दे और ज़बानी मुहब्बत का इज़हार करे तो उस मुहब्बत के हम काइल नही हैं, हम उस के

दाई नही हैं। ये दीने मतीन की हलावत नही है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से या अल्लाह से जो मुहब्बत है, उस मुहब्बत का तकाज़ा ये है कि इताअत की जाए, बंदगी की जाए।

दूसरी तरफ अगर कोई कहता है कि नमाज़ तो अल्लाह की मुहब्बत है लेकिन नमाज़ में अगर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खयाल आ जाए तो नमाज़ टूट जाती है, तो फिर उस ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का मतलब क्या समझा ? मेहबूब से जब मुहब्बत हो जाए तो मेहबूब की तरफ मंसूब हर चीज़ से मुहब्बत होती हैं इसी लिए मुकर्रिबीने बारगाहे खुदावंदी की मुहब्बत अल्लाह ही की मुहब्बत है। ये लोग बन्दों को इकठ्ठा कर के अपनी तरफ नही अल्लाह की तरफ भेजते हैं।

इस वास्ते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमायाः ऐ मेरे सहाबा अल्लाह की मुहब्बत की तरह मेरे साथ भी मुहब्बत करो।क्यों ? इस वास्ते कि मै तुम्हारे रब का प्यारा मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हूँ। अपने रब के साथ तुम्हे मुहब्बत तब हो सकेगी जब मेरे साथ तुम्हारी मुहब्बत होगी, वर्ना तुम्हारी मुहब्बत तुम्हारे मुँह पर मार दी जाएगी। अल्लाह फरमाएगा! तुम मेरे साथ मुहब्बत करते हो, मेरे मेहबूब के साथ कोई मुहब्बत नही है। उन के साथ मुहब्बत करोगे तो फिर मेरे साथ मुहब्बत होगी। इस वास्ते सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमायाः मेरे साथ मेरे रब की मुहब्बत की वजह से मुहब्बत करो।

❷तकाज़ा ए दोयमः

मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुहब्बते ईलाही का ज़रीआ

इख्तिमाम पर एक बात बयान करता हूँ। जो हमारी मुहब्बत का तकाज़ा है उस के लिहाज़ से एक शख्स रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में आया और उस ने आ कर कहाः मेहबूब! कयामत कब आएगी ? तो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तू ने उस के लिए तैय्यारी क्या की है ? तो साइल कहने लगाः मेने ज़्यादा नमाज़ों, रोज़ों और सदक़ों से तो कयामत की तैय्यारी नही की है। **(ये नही कहा कि बिल्कुल ही नही पढ़ी है)** । कुछ लोग इस से **(मआज़–अल्लाह)** ये माअना भी निकाल लेते हैं कि जिस ने नमाज़ तो कोई नही पढ़ी, रोज़ा कोई नही रखा। ये ग़लत है। उस ने कहा कि कसीर नमाज़ें तो नही पढ़ीं। लेकिन में अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूँ। "मेने ज़्यादा नमाज़ें नही पढ़ी" इस का मतलब ये है कि वह नमाज़े पंजगाना पढ़ते हैं, नफ्ल भी पढ़ते हैं, रोज़ा भी रखते हैं मगर वह जानते हैं कि जितना उस करीम और रहीम के लिए इबादत का हक़ है उतना मै इबादत नही कर सका। मेने कोई इतनी बड़ी तैय्यारी नही की हुई है लेकिन ये है कि मै अल्लाह से भी मुहब्बत करता हूँ और अल्लाह के मेहबूब अलैहिस्सलाम से भी मुहब्बत करता हूँ। इस पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया अगर ये बात है तो सुन लो! **"जो किसी के साथ प्यार करे कयामत के दिन उसी के साथ हो**गा।" इस पर हज़रते अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, इस्लाम लाने के बाद मुसलमानों को किसी मौके पर इतना खुश नही देखा जितना

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस जुमला पर खुश हो गए कि **जिस की जिस के साथ मुहब्बत है वह कयामत के दिन उसी के साथ होगा।**

अब यहाँ से ये पता चला कि मुहब्बते रसूल अगर न होती तो मुहब्बते ईलाही का फायदा किस को होता ? जन्नत तो अल्लाह की बनाई हुई है और अल्लाह है जन्नत देने वाला और अल्लाह तआला ने जन्नत में नबी अलैहिस्सलाम को रखना है और फरमाया अब जो मेरे मुहिब्ब होंगे वह मेरे मेहबूब के साथ होंगे। उसी मुहब्बत के तकाज़े के पेशे नज़र आज हमें इबादात करना हैं और ये ज़रूरी है कि निज़ामे ज़िंदगी में और निज़ामे बंदगी में जब फैशन सामने आए उस को छोड़ के, कहें मुझे मेरे रब से मुहब्बत है। जब मुआशरा कहे आ जाओ चंद दिनों में करोड़पती बन जाओगे सूदी कारोबार करो, तो आगे से ये कहना, नही! मेरी मेरे रब से मुहब्बत है। जो मेरा रब कहेगा उस के मुताबिक मै चलूँगा। नाजाइज़ ज़राए से दौलत इकठ्ठी नही करूँगा। जिस वक़्त जमाना उरियानी–फुहाशी से भर गया है तो मुहब्बते ईलाही ने अपनी आँखें बंद कर रखी हैं। कानों में अंगुलियाँ दे ली हैं। लोग कहते हैं तुम भी मज़े ले लो और ऐश व इशरत करो, ये बंदा ए मोमिन कहता है अल्लाह तआला ने फरमाया है कि अल्लाह की ग़ैरत ये है कि उसकी मख़्लूक में फुहाशी न हो। मै अल्लाह की ग़ैरत के ि खलाफ नही चल सकता क्यों कि मेरे रब से मेरी मुहब्बत है। आज इस धधकते हुए माहौल के अंदर हमें इस मुहब्बत का बरमला इज़हार करना चाहिए। दुकान में,घर में, मुआशरे में,सोसायटी में क्यों कि हर तरफ शैतान की मुहब्बत को आम किया जा रहा है। मुसलमान शैतान की मुहब्बत का झंडा ले कर निकल पड़े हैं, गलियों बाज़ारों में उस शैतानी मुहब्बत का सबक दिया जा रहा है। इन मुकद्दस लम्हात में हमें यह अहद करना है। हम खुद भी रेहमान से मुहब्बत करते हैं और इस रेममानी मुहब्बत को हमें हर तरफ फैलाना हैं। मेरी दुआ है अल्लाह तआला हमें इसके इब्लाग़ व तबलीग़ की तौफीक़ अता फरमाए।

व आ–ख़रू दाअवाना अनिलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन